

पाठ-सूची पूर्वार्ध

गद्य भाग

विषय			प्र
१—विदाको महिमा			1
२—गुरबी की झाता का पातन	•••		,
		•••	8
४ -परिधम			Ę
४—दवा	•••		5
६—शतुकं धोसे में न मामो '	•••		ξo
उ — सञ्चनवा का वर्ताव	•••	•••	₹ ₹
८—सत्यभाषद	•••	•••	₹ ₹
	•••	•••	१ ५
०—महादेव गोविन्द रानाडे	•••		•
			१स
: (5)	••	٠.	₹₹
:—मिनेभ			२४
e "e-6 ("4 +e*+) ;			• •



:: (₹) पद्माग विरय - इस्ति ही करती **:**-., £. हैं हिंचांच है देह ·-- €9 ž المراجعة المراجعة المراجعة ६—विद्वरहाँहि ... ·-- ξε ६ विनय हे होते 13 وسريدين فساية ببعثا ٠.. · . દક ६—हेन्दविने:द सदसई ... 3: ٠., ·Ē---... 35 ٠., •• ••• 35 ... 35 उत्तरार्थ १-दन्द्राई का माहम गद्यमाग المناع ال े चर्च दक्ती को बहुरम स्वादे होते. -4= 51 = 5=4.5 Ξ.



वालिवनोद

द्वीया भाग पूर्वार्ध गद्यभाग

१-विद्या की महिमा

एक दिन एक जड़का बचनों चाड़ा के पाछ की हुंछा हुत संख रहा था। संख् में देंहे हुए पुत्र से मता में कहा-्येता, किस केल में बैठे हैं। हर मुहन्ते के कहान में बतरात हैंने का उत्ताद होत्व रहा है।" नाता ने कहा — 'हुन हो बन होते को बाद कर्यों से बाते हुन बहुके से कहा नार्ट्स वर्ष इंतर है कही बनक में नहाम की प्रतिष्ठ हैं हैं .. त्र के के के के के के के कि The state of the state s THE RESERVE STATE OF THE STATE OF THE The state of the s ्रिक्ट इंचरक्र २ **क**े एक करने हैं। कर न



२—- गुम्जी की प्राज्ञ। का पालन

एक गुरजी अपने घर पर बहुत से पियामियों को पहाया करते थे। उनसे आर्मात नाम का एक निर्मामी गुरजी को शी यहां रहता और वहीं पढ़ा करना था। गुरजी अपने विद्यार्थियों से बहुं परिश्रम के कार्य कराया करने थे। ऐसा वे इसलिए करते थे कि जिससे विद्यार्थियों के। बचपन से ही परिश्रम करने का अस्पास ही जाय।

एक दिन गुरुली में भारति की एक रहेत की मेंट्र बीचने की भारति हैं। गुरुली की भारति ही भारति भट उठ कर रहेत की चल दिया। वहीं पहुँच कर बहुधान के सेट की मेट्र बीधने लगा। उसने बड़े परिश्रम से चारों भीर की मेट्रें से बीध दीं। परस्तु एक जगह घोड़ी सी मेंट्र उससे न वैध सकी। उस देवार में क्ट्र बार मेंट्र बनाई, परस्तु पानी का बेर बहाँ इतना भविक या कि बहु जब बनाता तभी पानी मेंट्र की काट देता। भन्त से जब उसने देखा कि यह सेट्र सेर बाँध म वैध मकंगी तब बहु आप ही बहां लेट गया जहां से पानी बाहा। निकलना था। उसके लट जाने से गानी निकलना बन्द हा गया बहु कह बण्ट इसा करार गानी राफ पड़ा रहा





्ता है। क्टोंग के दिना किसी की कुछ भी नहीं नित कता।

महुच्यों की बात जाने शिलिए. होटे होटे की हों तक का म काम करते देखते हैं। शहद की मक्सी की देखिए, वह ततना होटा जीव हैं। उन मक्सियों में से कुछ पुष्पी का रस म कर लाती हैं, कुछ रहने के किए हता लगातों है भीर कुछ इद हैपार करती हैं। सारश्चिपद कि शहद की मक्सियों ते कुछ न कुछ उद्योग सवस्य करती ही रहती हैं।

बहुं दुःस की बात है कि होटे होटे की है मको है तो रात हैन उद्योग में लगे रहे धीर मनुष्य चुपपाप श्राम पर श्रम रे बैठे रहें। सुरु बैठने के लिए मनुष्य नहीं बनाया गया। हि काम धीर उद्योग करने के ही लिए बनाया गया है। प्रालम में पड़े रहने धीर उद्योग न करने से मनुष्य का कोई हाम नहीं बन सकता।

पर में अनेक प्रकार के त्याने पीने के पदार्थ रक्ते हों, सामने कींपधी का देर लग रहा हो, परन्तु उनके देखने से ही म तो किसी की भूत दूर होगों और न राग शान्त होगा। भूत्व और रोग के दूर करने के लिए उनकी उचित रीति से खाना पीना चाहिए। त्याना पीना भी एक प्रकार का काम है। मक निए भी ब्योग की आवश्यकता है। अतएव कार्य-सांद्र क निए सबके उद्योग करना चाहए।

ज्ञा नेतृथ्ये कीम नहीं करन याता तिकरन ५६ रतन



दे विश्वकृत निरास है। सबे धीर ध्ययने तो से बहने लग कि सेरी होते यही सोटी है, यह स्थाकरण की विद्या सुभ कथी न धारियों, इमिन्स इमने परिक्षम करना स्पर्ध है। इनके सामी टी पड़ कर पूरे दैयाकरण विद्वान यन गये, पर से कोरे के कोरे ही रहे।

एक दिन गुराणों से बेपदेश की ज़ुदू चौड़ा। उसी दिन स परना निरम्ता सब क्षेत्र काह कर वे घर से भाग गर्न क्षेतर कुक्ष दिन देशर चयर सारे सारे निर्दे दरें।

बीपरेय पुनर्त किरते एक दिन कियाँ नरोका के पाट पर जानिक में) बहु पाट पायर के बना हुआ था । ये बैटे ही से कि इन्में से एक की पटा नेकर घाट पर काई की ए पड़ा पाट पर तर कर नाम काने हमी । नाम कर पुक्र पर दह पहें की पार्टी में सर कर बार्टी पर की पार्टी नहें ।

जिस स्थान पर बहु यह उक्ता या बहा गहुए प्रश्न हुआ हा। बार्स गहु यह कि याँन हिन हुए स्थान पर यह हुआ हा। बार्स गहु यह कि याँन से प्रयास गहु यह गया या और को दार का बारह करता कर में दियार बार में प्रयास गहु यह गया या और को दार का बारह करता कर में दियार बार भी के पर प्रयास है। बार को लोक प्रयास कर यह की का का मार्थ के प्रयास प्यास प्रयास प्य

दर विकास के बार्ट्स दर आजा एक एड के राज्यान



Æ

दया।

सब दिन एक से नहीं रहते। भाज जो सब प्रकार से सुख चैन में हैं, न जाने कल इस पर क्या विपत्ति भा पड़े। भ्रापत्ति में यदि कोई किसी को वचनों से भी महायदा करता है तो इतने हो से उसे बहुत कुछ सहारा मिल जाता है।

गाय, बैल घादि पशु धपना सुख दुःच किसी से कह नहीं मकते। इस कारण उन्हें कभी कष्ट न पहुँचाना चाहिए। किसी पंगु, मूने, अंधे धीर रोगो को देख कर उसकी हैंसी न उड़ानी चाहिए। तुम्हारी सहायता से उनका यहुत कुछ भन्ना हो सकता है।

एक दिन काशी में एक लेंगड़ा साधु मार्ग में पड़ा था। माप का महीना था। यड़ा जाड़ा पड़ रहा था। मारे जाड़े के वह ठिठुर रहा था। उसी समय दयाशहूर नामक एक लड़का उसी मार्ग से जा रहा था। दयाशहूर को उस लेंगड़े साधु पर दया था गई। वह उसका कष्ट धीर न देख सका। दयाशहूर न दया करके अपना कपड़ा उतार कर उसे थोड़ने के जिए। दे दिया।

त्तव द्रयोगङ्कर आपने घर गया तव उसने कपहा है हैने कासब न्तास्त अपने पिता को सना देखा। उसका पिता उसके बत कीमें संबंध नमन्ने हुआ, उसने उसका पड़ा प्यार



भागने लगी। मुंगें ने कहा-"क्यों, क्यों, कहां चली १ अय के कोई भय की बाद नहीं है।" लीमड़ी ने कहा---"यह के सब है, परन्तु कहीं इन इन्तों ने भी तुन्दारी तरह टिंदोरा न सुना हो।"

७-सजनता का वर्ताव

धन्छे पुरुष सपने साथ धन्छो वरह वर्ताव किया करते हैं। वे सदा ऐसे हो बचन वोला करते हैं जिससे सबका चित्त प्रमन्न हो। अन्ते पुरुष जब किसो से मिन्नते हैं तब उसका हुशल-समाचार पृद्धते हैं धीर सबका धादर-सत्कार करते हैं। इसी की सञ्जनता का बर्जव कहते हैं।

जिन मनुष्य की वादी में नम्नत भीर मीतापन नहीं इसके साथ निलने की किसी का मन नहीं चाहता। सब कोई उससे क्वर्ते ही रहते हैं। ऐसा मनुष्य शीव्र ही सेसार में दुराई का घर दन जाता है।

नमस्कार भीर प्रयाम करके कुरात पूछने भीर भपनी मीठी वार्यो से दूसरे की असन करने में गाँठ की एक कीड़ी भी नहीं लगवी । परन्तु ऐसा करने से लाभ बहुव होता है। इसी लिए सलुक्य दूसरों के साथ सदा सज्जनता का दर्वांश किया करते हैं।

जा काई भपने पर भावे हमक साथ साज्ञनता का बनाव

करना चाहिए। जा मिलन याग्य ही उनसे स मिलना और इनके साथ दुर्जनता का धर्नाय करना उधित नहीं। ऐसा करनेपालों की गिननी सञ्चां से नहीं हो सकती। जिसमें साजनता नहीं वह सहात कदापि नहीं हा सकता।

सञ्चलता का बर्ताव साधन क लिए उत्तम मगुष्यों की संगति करनी चाहिए। असु पुरुषांस सिल कर उनकी सज्ञ-मताक बनोय का यान स दसना गाहिए। गञ्ज पुरुष का प्रदेशा प्रदेशान यह है कि वेदमाँ। की प्रतिद्वा का त्यान रक्ता करते हैं। वे चपने संपन्नी पर

कुपा किया करते हैं शीर किसी संतक शाप श्रापका भी दनका हा जाय ना व दगका लगा कर दने हैं। जा रियायों राजनता का बतांब करते हैं रतकी सभी

चारत है। व गका सुन्ता रहत है थीर कन्ही की प्रतिया इंग्लं है।

=-राग्यभाषा

सन्दर्भ बर बर संगण में बेन्द्रे पदली नहीं। शता है सक्त से सम्बंध मती से भाति धालकुकी की भी पता हत क्षाना है। साथ बाजियाने मन्त्र की गंगाचा में बन्ते प्रतिप्रा

राज है। मनुष्य की र्यापन है कि चार्च विश्वा ही असी सक्त करोज का जान नारत् राज के हाण में जा प्राचे है। लड़की, तुम मदा सत्य पेता करों। भूल से भी कभी भूठ दात तुंत से न निकाला करों। भूठ पीलीये वो लीयों की दिष्ट में गिर लाक्षेत्र कीर किर तुम्हारा विश्वास जाता रहेता। यदि किर सत्य पात भी कही वी कोई तुम्हारा विश्वास न करेता। देखी, में दुम्हें एक सत्य मोलनेशलें लहके का कृतान्त्र सुनाता हूँ। तुम बसे ध्यान देकर भुनते।

एक बार बहुव में नुमलमान बगुदाद गहर की जा रहें थे। पनते पनते वे एक बहुत में पहुँचे। सार्यकात हो गया था और बन्ती की बहुंग हुए। जाड़ा ऐसे कहाके का पढ़ रहा था कि मदके हाथ पाँव ऐंडे जाते थे। वे लीग इस जहन्त में जाही रहे थे कि इतने में बहुत में डाकु इन पर हुद्द पड़े। इनका मारा मान समयाद डाकुओं ने सीन तिया।

इन्हीं पात्रियों में घक होता सा लहका भी था। तह हाकुमों ने उसके पास कृद्ध न पाया तर वे उसके कपढ़े टेडील्में तमें। परन्तु किर भी कृद्ध उसके हाथ न लगा। हर एक हाकू न नहके से दुद्धा—"क्या देरे पास कृद्ध नहीं हैं हैं" नदका था सरवारों। उसके भट कह दिया—"दे देर।"



माहुँग।' उसके साथ सब साथी डाकुओं ने भी प्रतिज्ञा कर ली कि अब इस किसी की कष्ट न देंगे। उन्होंने अपने सरदार से कहा—''जैसे आज तक भाग बुराई में इसारे सरदार रहे वैसे ही अब भन्नाई में भी इसारे सरदार रहिए।''

उन हाकुकों ने सारा माल यात्रियों को लाटा दिया कीर वे इसी समय से सुमार्ग पर चलने लगे।

उस लड़के का नाम भय्दुलकादिर था। वह लड़का ईरान का एक बहुट वड़ा नामां साधु हो गया है।

६-परोपकार

किसी राजा की सेना का एक सिपाही बड़ा बड़ी कीर चतुर था। राजा उसकी बड़ा प्रतिष्ठा करता था। राजा की इस पर इतना विश्वास था कि उसने सारा कान उसी पर होड़ रक्सा था। राजा जो कान करता नव उसी की सम्मति से।

कुछ दिन वक तो वह निपाही राज्य के प्रत्येक काम में तन मन से उद्योग करता रहा। परन्तु भन्त में उसके मन मंगर भाषा कि राज्ञ की राज्ञाही से उत्तर कर आप ही राज्ञ दन वैठे उसा इन्हर का पूरा करन के निष्ण वह, धीरे धार एक रूप से पहुचनत्र राजन कर

उस प्रहेषस्त्र का सारा भद्र राजा काम चूम हा राषा । राजा



इस कारए मेंने पाहा कि कोई ऐसा यन्थन होना पाहिए जिसमें उसका सारा शरीर वैंथ जाय और वह यन्थन किसी के काटे न कट सके। यहुत कुछ सीच विचार के अनन्तर, उपकार या भलाई से अधिक और कोई वन्थन मेरी समभ में नहीं आया। कारए यह कि उपकार का यन्थन मन पर होता है और मन सारे शरीर का राजा है। जब मन उन्थन में डाल दिया गया तद उसके हाथ, पवि आदि सारे अनुचर भी वन्थन में हो जाते हैं। उपकार के बन्धन से बैंय कर उपकार करने वाले की कभी कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।"

१०-महादेव गोविन्द रानाडे

विद्यार्थियों, में आनवा हूँ, तुनमें से कोई ही ऐसा होगा जिसमें दंदर नगर का नाम म सुना हो। समुद्र के वह पर यह एक बहुव हो विद्यास नगर है। वंदर्र का काम, जो हुम स्तावे हो, पहले पहल इसी नगर से लाया गया था। विलायव को बहुव सो बस्तुयेँ इसी नगर से यहाँ भावों हैं। वंदर्ड के समीप हो एक पूना नामक नगर हैं। यहाँ के एक महापुरुष का इस्तान्त सुना। पहले यह चित्र होगा कि उस महापुरुष का इसान्त सुना। पहले यह चित्र होगा कि उस महापुरुष का नम्म बदला दिया जाय।

हनका माम महादेव रोविन्द रानाई था। वचपन में वे वह दुवेन थे। सदा गूँगों को तरह चुपचाप बैठे रहा करते



इस कपास देने बाहा कि बेर्णु वसा साथन क्षाप करिएन है। समें मुसका साथ कार देन गए दीन कर बारन किया ब कार से बाल के सके। बेर्गु साथ साथ दिवस के किराना गएकार से भागा से करिक के कि बार्णु बरान देने समस्त दे सही बागा कारस गर कि परकार का करान समस्य से सान है दीन साथ साथ साथ का साल है। यह साथ बराय से साथ देवा साथ कर उसके हाथ, पाँच कारि साथ बारु के सी बाजन में हा जा है। परकार को समस्य सु देन कर बराय के स्टार साथ के बास कार्य हारि सार्य की परमा सु देन कर बराय के स्टार

१०-महादेव गोदिन्द गनाटे

रिकारिया, में लागा है, मुगमें में कोई हो ऐसा लेगा जिसमें दर्श नाम का नाम मुख्या हो। सन्दर्भ में ग पर पार एक बहुत ही दियान नाम है। यद्दें का माम, पेर हम हमों ही, पाले पहां हमों नाम में माम माम पा। मिलावा की बहुत में। बहुत हमा नाम में यहाँ द्वारों है। पेर्यु के मामीय ही, एक पूमा नाम नाम है। यद्दें के एक महापुरूष का जाना मुना। पलन पह चित्र होगा कि इस महापुरूष का जाना मुना। पलन पह चित्र होगा कि इस महापुरूष का जाना सुना। पलन पह चित्र होगा कि इस महापुरूष

त्रक्षक स्थाप भगाइक शास्त्रिक कसाल था। **दस्यस** स अस्ति सम्बद्धाः स्थापिक स्थाप्त कृष्ट अस्ति क्षेत्रक



मादा देख कर झाँर यही समक्ष कर कि कोई साधारण मतुष्य होगा, उनसे कहने लगी—'भैया, विनक मेरे बोक्त को हाय लगा दो''। यह सुनवे ही उन्होंने बोक्त क्वा कर बुढ़िया के सिर पर रख दिया।

देखों, वे फैंसे सक्कन में । यदि भीर कोई इटने बड़े पर पर होता दा घरती पर पाँच भी न रखता, योभ उठाना वो असग रहा, उन देचारी दोन दुढ़िया की और आँख उठा कर देखना भी नहीं। यदि रानाडे महारूप में ऐसे ऐसे सद्-पुर न होते दो साज उनकी इटनो प्रविष्ठा कैसे होती।

११-पिता की श्राज्ञा का पालन

भना ऐसा कीन होगा की श्रीरानचन्द्रकों को कथा न जानता हो। ये भपने निता को भारत से, धर्याच्या की राज्याही अपने भाई भरत के लिए त्याग कर, चौद्दृह वर्ष तक इन ने रहे। यह बात बहुत पुरानों है। भभी कुछ दिन हुए, एक राजकुमार ने ठोंक ऐसा हो काम कर दिखाया। यह किन्त भाश्यय की बान है कि यह भी श्रीरामचन्द्र की का ही उगत या इसका उन्हालन सन

सबाह के गया। राजीस्त के दापुत्र ये एक का नाम सामान्य या भीप उसरे का तयसित । ये दाना यसने भाजा ये। सामीन्द अपनिह से कुत १३ व जस्सा या इस कारण ये। यदि गुँद पर मिल्ययां भी धा बैडनीं सो पर्दे म भी न में । यहने ती बहुत दिन तक वे बीते ही नहीं, जब बार भगे तब बहुन सुनला कर । उसके माता पिता उसकी दशा है कर मन में कहा करने थे कि यह खड़का क्या करके सामग

कुछ यहे दाने पर उनका उनके पिता में एक पाठमान में धैटा दिया। कुछ दिन में उनकी बाणी शब हो गई। वि ता वहा चित्रीता थीर द्वेश लड्का ऐसा भलता निक्ता रहत अर में कें।ई लक्ष्मा प्रस्क समान न था। दिन पर वि

उसकी विद्यानमृद्धि बदुनी श्री गई। धननी सृद्धि की मीक्यमा। कारण उसने बाल्य काल में ही माती पढ़ाई समाप्र कर भी। अव पड़ जिल्हा कर वे निकात ना प्रति एक छोती स

नीकरी चित्र गर्ड। बलिति होते हत्त त एक दिल बंबई । हाइबार्ट के अस है। सब । तथ हैने चरिकार का का कर भी राजमें चलियात मह

बराज मा । वे सना सर्वती चाल-नामन अंवापे बन्द्र बारत मा । बाजापारि भी वैदार पी. माना करते में । मानाफ स धीन करोबानम हत्य की में बात ही बया ने पान मह न

मान म । पोत्तर प्रार पर्वा में कभी भी द मही पापा । उस दिल के समझी पार्ट केंद्र साथ में समझ हैन नारक अब हो बा वक्ष के के पूर्ण पर स्वतं वाही की । बंदा क कारण इस्तर हैंब शह अवारि स स्राप्त अ स्ट्रा अर 1 दर्दन रत त सका नहां 'द व हाईबाई ब अप है, श्रमके क्षेत्र.

10

मादा देख कर झार यहाँ मनक कर कि कोई सायास्य नतुष्य होगा, इनसे कहने लगो—'भैया, तनिक मेरे दोक की हाय लगा दो"। यह मुनते हो उन्होंने दोक बठा कर बुढ़िया के सिर पर रख दिया।

देखा, वे कैसे मालन थे। यदि और कोई इदने बड़े पर पर होता वा घरवी पर पांच भी न स्वता, बोम्म इटाना के भाषा रहा, इस बेचारी दीन दुढ़िया की और और इटा कर देखता भी नहीं। यदि रानांड महारूप में ऐसे ऐसे सद्-गुरा न होते के भाज इनकी इदनी प्रदिष्ठा कैसे होती।

११-पिता की श्राज्ञा का पालन

भना ऐमा कीन होगा तो श्रीरामक्ला की करा न जानता हो। ये भपने पिता की भाता से, भयोष्या की राजगरी भपने भार भरत के लिए त्याग कर चौरह वर्ष तक वन में रहें। यह बात बहुत पुरानों हैं। भभी हुद दिन हुए, एक राजहनार ने ठीक ऐसा हो काम कर दिलाया। यह कितने भाश्ये की बात है कि यह भी श्रीरामक्ला कर ही बंगा था। इसका हुचान्त मुनो।

संबाद के राद्या जातिहत के दो पुत्र के क्या का नाम सामामन का भीप हमारे का उपनिष्ठ । ये देनेही यसक के सामानित अवनिष्ठ स कुछ पटे पूर्व देसका का दुस



वाका १ वर्ष सामा कि भेड़ते में हाति ही क्या है। पह क मानासिक् एक्षा केल हर क्षेत्र से मरा कृता करते तिहा हे राज कारा। सालु दह वह कहे राज पहुँदा दह न्तरं रहा हो हुत दिनेक ही हम हैनी। नहा हुत करता पढ़ा हुत्त का केर वांच्या है है है है है है है द्धि है देख रहा था। एका को रेंडी करा केंब कर प्रीमानिह का होत्र उसी समय बहुत्वर है। रहा । है है है है है है हें हिंद में दे हर हाता का वह तद मूल करता। . स्वा को सोमानिह को उस उक्तर करते हुई दरा के हेरा कर कार्यने हैं हो राज । एक की विस्तान का कैंद ومع المروب و المروب والمرابع المروب والمروب وا ما المان الم महोता । प्रत्यु वर राटा है देखा है। में महिले महिल सह हीं राष्ट्र की इसमें वहीं सहस्त में त्यान स्थित हम है कर

المن المنظمة المن المنظمة المن المنظمة المنظمة



भोमिनिष्ट पुष साथे राष्ट्रा की बातें भुन रहा का। हसकी करूठी तरह कानुभव हो गया कि राष्ट्रा में कपना हदय पायर से भी क्वियत के लिए क्वियत के लिए क्वियत प्रेंग के लिए क्वियत प्रेंग के लिए क्वियत प्रेंग के लिए क्वियत प्रेंग के लिए के लिए

राद्याः ने क्ये पुष्णाप सहा दश कर कहा—"पुत्र, धायक शोष विधार गत क्यो । इस हत्या में कुत हानि नहीं। श्यायकीर देश के हित के लिए हुम यह काम कारण करें। यदि इस्ते कुल कप्याय या पाप भी होगा है। मेरा होगा, हुन्हाग सहीं। क्षाकों, में काला देला है, मुस कपित्र की नार काको।"

सीमितिह में बाहा की सम्बर्ध साथे परहों के पास इस ही धीमहाम जीह कर बड़ी राज्या से बहा—की महानात. वेटे साथ धार्यने जी कारण किया जा तराका पान धार्यके १. ते शुक्त १ धार्य में बहु कारा करेंगा कियाने जर्मातह की हाला धार्य ही धीम में तराकी हर बाराकी शिरहा ही, धारणे ते हाने राज्यातन हेंसी दिया, धार्य भारती प्रशासन की जागित के विश्व साल्यात हेंगा है जाए से बहुई पाट होगाणा (बहुत-रित्त बहुई पहर प्रात्न का जान्य का जीन की पिल में राज्य हा जार्य हत कारण जान्या का साथ का शाह हत है बार के बार भारता का साथ साथ की साथ साह का



ई चीज स्त्री गई है ?" दशोरसहाम्मद ने कहा—"हाँ, मेरो यों की वैली स्त्री गई है।" लड़के ने उसकी वैली उसे देंकर हा—"देखिए यही तो नहीं है ?"काबुजी ने कहा—"हाँ, ही है।" वैली लेकर वह वहीं वैठ कर रुपये गिनने लगा।

जब रूपये पूरे निकले तब आरचर्य में होकर उसने हा — "तुमको इतने रूपयों का कुछ भी लीभ न हुआ।" इके ने कहा — " दचपन से ही मुक्ते यह शिला दी गई है कि राये इच्य को ठोकरी के ममान ममक्तना चाहिए'।" लड़के की ति सुन कर उसकी सचाई के लिए काहुली बड़ा प्रसन्न हुआ। रा मन में कहने लगा — "ऐसे सत्यवादी और निर्लोभ पुत्र की। कर उसकी माता-पिदा न लाने किदने प्रसन्न होते होंगे।"

काबुली इस लहके को पाँच रुपये देने लगा। लहके ने हा—''मैंने तो पारितेरिक पाने के योग्य कोई काम नहीं किया। रपको वस्तु भाषको मींप दो। यह तो करना उचित हो या।'

कावनी न वह सब समाचार एक क्रेगरेको समाचारपब १९२१ दिया इससे इससे यह भा निस्ता था कि च रुपये १८२१ देवा इससे इससे यह भा निस्ता था कि च रुपये १८२१ देवक भारता के च चदि नहका रुपय देवा १८२१ देवक भारता के नाम प्रदेश नहक न सर साथ १८२० १८३१ करा है इससे भारता स्थान के कि नाम १८२० च्या सह जरहा रुपय के देन नेइक सदेवा

उस लड़के का नाम बीरेश्वर मुकर्जी था। वह बन्नू ज़िल स्कूल की एंट्रेंस कचामे पढता था।

१४-नासिरुद्दीन महमूद (१)

बादशाह मासिकहोन का जीवन-पृत्तान्त पढ़ने से हम समभ्य सकते हैं कि जा मनुष्य सभ्य, सज्जन बीर सीधे सादे हाते हैं चाहे वे यादशाह भी हो जायें तो भी उनकी अभिमान नहीं होता थार वे धपनी मञ्जनता के। नहीं छोड़ते ! सदा सत्कर्म ही करते रहते हैं।

नासिक्दीन भद्दमृद सुलवान अलवमज्ञ का पीत्र या। पितामइ के मर जाने पर असके शत्रुकों ने उसे पकड़ लिया। उसके पकड़े जाने पर, देहली में जितने बादशाह हुए, उन्होंने भपनी प्रजा को ऐसा सताया कि वद सबकी सब विगड़ खडी हुई थीर नासिरहोन का छुड़ा कर उसने अपना बादशाह

बना लिया।

जव नासिरुद्दोन बादशाह बना तव राज्य के कार्यों में उमने बड़ी श्रदियाँ पाईँ। पहले यादशाही की भ्रमावधानी से यमुना के दिखियों भाग का सारा देश धीर मालवा पठानों के द्वाय से निकल गया था। और सुगल सिन्ध नदी के पार उतर कर पठानों के देश पर घडाई करना चाहते से। नामिन्दीन ने सबसे पहले यह काम किया कि सपने

नासिक्टान गहमृद् ।

त बन न सम्बा गयासुरोन की सामृद्ध से सुरूनों की कार्न कर रोव दिया धीर जो देश दीतों में इस लिया या बह बरवं सद होटा दिया।

१४-नानिस्तिन महमृद (२)

मानिक्रोंन की विदा की दर्ग पार की। दर दिल्ली .. का बता साकार किया करता था। तरह टार् से मारी र द दाने में बह कात दिन देशन कृता नहीं का कि लेक्सुने का कह आ तरी हुँद हरान कन्द्र होता हा। सहस्रक वं बरते रहते दर भा हताई एत्सकी का देखानानाना

हत्य वा दिया । इसमें साम्महर्षे होता देशन का एक हतालूम فريقيد إيده هذبرك واستها فياتا غذب هي فيث ذلا بالقاء And September 6360 Cal

ترويفورت في ذور فديد في فيت متدن مقضد هد وم المراه المراوع والمراهد المراوع المراه والمراه المراوع المر جيم أومع المراج بين المنظمة في المقامة (وياشية غ عدر مر دو دورود ومر عدور فر محدرود amost a contract the state site am es la entidencia que a asido que con con en

and the same of the property te t ps it at the feet of the security of the

₹ .

१४-नासिरुद्दीन महमूद (१)

बादशाह नासिकहोन का जीवन-युत्तान्त पढ़ने से हम समभ मकते हैं कि जा मतुष्य सभ्य, सज्जन धार सीधे सादे होते हैं चाहे वे बादशाह भी हो जायें ता भी उनकी अभिमान नहीं होता थीर वे भ्रपनी सज्जनना की नहीं छोड़ते। सदा संकर्म ही करते रहते हैं। नासिरुद्दीन महमूद सुलक्षान घलतमश का पीत्र या। वितामह के मर जाने पर असके शतुकों ने उसे पकड़ लिया। उसके पकड़े जाने पर, देहली में जितने बादशाह हुए, उन्होंने द्धपनी प्रजा की ऐसा सताया कि वह सबकी सब विगड़ खड़ी हुई और नासिहद्दीन की छुड़ा कर उसने अपना बादशाई

यनालिया। जर नासिकहोन बादशाह बना तर राज्य के कार्यों में उसने बड़ी श्रुटियाँ पाईँ । पहले बादशाहीं की बामावधानी से यमुना के दक्षियी भाग का सारा देश और मानवा पठानों के हाथ से निकल गया था। और सुगल सिन्ध नदी के पार उतर कर पठानों के देश पर चढाई करना चाहते थे।

नगमिनहीन ने मदसे पहले यह काम किया कि धर्पने

न्त्रों गयासुदीन को सलाइ से सुगुलों की धाने बढ़ने से क दिया धीर जो देश धीरों ने दबा लिया या वह युढ़ .रक्षे सब लीटा दिया।

१५-नासिस्दीन महमृद (२)

सासिरहोन को विया को वहीं चाह यी। वह विद्वानों
ता यहां सत्कार किया करता था। तरह वरह के मन्यों
हे पढ़ने में बह रात दिन ऐसा लगा रहता था कि जेलखाने
ता कह भी उसे कुछ पुरान मालूम होता था। राज-काज
हे करते रहने पर भी उसने पुरतकों का देखना-मालना
तर न किया। उसने भारतबर्य भीर हैरान का एक अच्छा
विद्वास तैयार कराया, जिसका नाम उसी के नाम पर "वय-
हात नासिरी" रहररा गया।

नासिरहोन को इस पाव का बहा प्यांन रहता या कि मेरे कारच क्सिंग का जिल्ल न दुसे। एक दिन प्रपनी बनाई एक पुत्तक उसने प्रपने एक सरदार की दिसाई। सरदार ने इसमें कई एक घड़ियाँ बताई। सरदार की कपनातुनार असिरुहोन में बैसा ही बना दिया। परन्तु जब सरदार कला गया तब नासिरहोन में बैसा ही बना दिया जैसा पहले था। नामी ने दुता "यह क्या दात है। जो धारने काट

१९०० मार्का पर वर्ष २० ६०० मार्का काट दिया या ध्या पर वर्षी स्यादना दिया १ । नाम्बिट्रीन ने



ही है कि मैं पुलके निस्स दिन्स कर वेषता भीर उसी से भनता पेट पानता हूँ। उसकी भामदनी इतनी भी नहीं होती कि हम तुम भन्दी टरह गा पी सकें। किर भना दासी कहां से रस सकता हूँ।

: रहा केता । उसमें मेरा एक पैसा भी नहीं । वह दो प्रज्ञा ; का हैं । इसी के सुख कीर लाभ के कामे में सगाया जा सकता : है । यदि में काज उसमें से एक पैसा भी ले लूँ हो कर ईयर ; को क्या उद्धर हुँगा । जिस प्रकार हो सके, यह कह सही, ; ईथर हुमको इसका कर हैगा।"

१६-- सवाई जयसिंह

कीरंगहें कीर महाराजा जयिन्ह में किसी कारम कर-दन ही गई। कैरंगहें में ने बहुता चाहा कि महाराज से दहना में, पर के भरती पुढिमारों से उसके हाम म चामे। उनके सरने पर चारगह ने उसके नहके की पकड़वा मेंगाचा। गड़-हमार कमों दक दिया ही सीमने में समें में कीर सेमार के रपडहार न जाने में। चाले समय उसके माई दस्मी में कारमी अपनी समस के मतुमार बारगाह के रही के उत्तर दहाये गड़-हमार न कहा। जो बारगाह उसमा म का बादान म पूछ हा क्या उसर ही। इसका मां का बादान मां का बादान में इसर इसर ही। इसका मां का बादान करा। इसर वह स



कर बड़े बड़े कर सहवा हुमा देग्न-विदेश सिरते हुगा । उसके बहुँ। हुएँ देशा थी । कभी वह माहवा जाता, कभी ग्वाहियर, भीर कभी किसी सबन वन में जा दिएका । वैरानर्खा का एक सबा नित्र था । भड़ुतकासिन उसका नाम था । वह ग्वाहियर राज्य का एक बढ़ा कमैंबाएँ। था । वह भी इस आपरकाड में वेश दहुल कर भपने नित्र के साथ सिरदा था ।

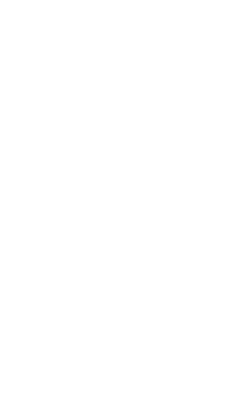
एक दिन देनों निव एक इस के नीवे दैठे हुए यह क्षेष रहे ये कि भद क्या करना चाहिए। इतने में पडानों का एक सरदार इस सिगाहियों को साथ तिये हुए भा पहुँचा। उसने भावे ही उन देशों को पेर दिया भीर कहने सगा—"हुन कीन हो १ कहाँ से भावे ही १ कहाँ सामोगे १"

यह सुन महुएकृतिन ने छहा—''माई, इस याबी हैं। मन्दे राग्ने बाते के दिए गुजराद की भीर जा रहे हैं।' यह सुन भीर मन में कुछ सोवकर सरदार ने दिर पूछा—''दुम ही कहीं के !'' महुएकृतिन देति उठा—''देगाट के।'

दैरानतां भीर भट्टपकारिन इन दोनों की भायु वरादर भी। इनका रङ्क स्माने देखा निस्ता जुलता था कि ये दोनों सहोदर भाई प्रतीत होते थे।

सरदार के मन में कुछ सन्देह पैटा हुआ। उसने आसी साथियों से पूछा—"पुसमें से कोई उनके पहचानता है १ में समभ्यता हूँ कि ये सबाय पुत्तमों के गुप्तवर हैं। इस पर एक







पालने पहते हैं १ ऐसा न करूँ तो बृहे माँ-धाप की कहां से तिलाऊँ १ घाप घपनो वार्ते घपने पास रिक्षि । वस धव मलाई इसो में हैं, कि जो कुछ तुन्हारे पास हो सब चुपके से रख दो घाँर घपना मार्ग पकड़ो । नहीं तो ऐसा लट्ट मारुंगा कि सिर फट जायगा।"

रब्राकर ने ये वार्ते कहीं वो वहें क्रोध में, परन्तु साधु वो साधु ही था। उसने उसकी वार्तो की सुन कर कहा—"में हुमसे एक बाव पूछवा हूँ। क्या हुन्हारे मावा-पिता ज्ञानवे हैं कि तुम किस प्रकार धन कमा कर साते हो ?" रब्राकर में कहा—"में पह कुछ नहीं जानवा।"

साधु ने कहा— "मच्छा एक वार उनसे पृद्ध तो भामो। देखो तो बुन्हारी यह कमाई उनके पसन्द है या नहीं १ यदि पसन्द हो तो भाकर मुक्ते मार हालना । मैं साधु हूँ, भसत्य कभी नहीं बोलता।"

रहाकर ये बावें सुनवे ही सिस्तिस्ता कर हैंस पड़ा भीर कहने लगा—"वाह! कच्छों कही! मैं उबर घर जार्डे, भाष इधर चन्पत ही! मैं भाषको बावों को खूब समभ्यता हैं। भाष सुन्ने न सिखताइए, सीधे सीधे देना ही वो दे दो नहीं वो वैसी कहो।"

२०-उपदेश का फल (३)

साधुनं इसको बातों को कुछ भी पर्दान की। इसका



धव तक कुसंगित में पढ़ जाने के कारण, धवान से, जो कुछ किया सो किया; परमात्मा से वसके लिए चमा माँगो। भीर रात-दिन वसकी भक्ति किया करो।"

देखों, साधु के उपदेश का रहाकर के हृदय पर ऐसा प्रभाव पढ़ा कि वह जिल्लुल सुधर गया। फिर वह परोपकार भीर पढ़ने लिखने में ही राव दिन लगा रहवा था। हांवे छोते उसका यश चारों भोर फैल गया भीर विद्या भी उसे इवनी भिषक भा गई कि उसने एक वहा प्रन्य निर्माण किया; जिसका नाम रामा-यस है। वहां रहाकर बाल्मीकि के नाम से विख्यात हुआ। बाल्मीकि रामायस इन्हों ने बनाई सी।

२१-महारानी कुन्ती की सज्जनता (१)

विद्यार्थियो, यदि तुमने दिल्लो देखी न होगों तो उसका नाम तो सवस्य हो सुना होगा। क्योंकि वह एक बढ़ी प्रसिद्ध सीर प्राचीन नगरी है। भारतवर्ष के राजा सीर बादसाह सदा वहीं रहा करते से।

प्राचीन काल में दिशों के पास हो एक बहुत यहा नगर या। इसका नाम हरितनापुर या। वहां का राजा दुर्योधन ध्रमने पचेरे भाई पाँचों पाण्डवों से वहीं ईप्यां रखता या। दुर्योधन के द्वारा कह पाकर पाँचों पाण्डव ध्रमनों माता कृत्वी की माय लंकर वहां से चलें गये। वे वेश बदल कर एक शहर में एक



धव तक कुसंगति में पढ़ जाने के कारय, भक्षान से, जो कुछ किया सो किया; परमात्मा से उसके जिथ चना माँगो। मीर रात-दिन उसकी मिक्त किया करो।"

देखों, साधु के व्यदेश का रहाकर के हृदय पर ऐसा प्रमाव पड़ा कि वह विल्रहुल सुपर गया। किर वह परोपकार भीर पड़ने लिखने में ही राव दिन लगा रहवा था। होते होते उसका यश चारों भोर फैंड गया भीर विद्या भी उसे इवनी भिषक भा गई कि उसने एक दड़ा प्रन्थ निर्माण किया; जिसका नाम रामा-पद्य है। वही रहाकर बाल्मीकि के नाम से विल्याव हुमा। वाल्मीकि रामायद इन्हीं ने बनाई थी।

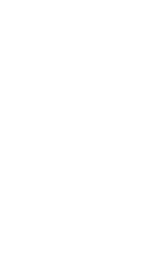
२१-महारानी कुन्ती की सज्जनता (१)

विद्यार्थियो, यदि तुमने दिह्यो देखी न होगी वी उसका नाम वी भवस्य हो मुना होगा। क्योंकि वह एक बढ़ी प्रसिद्ध भीर प्राचीन नगरी है। भारववर्ष के राज्ञ भीर पादशाह सदा यहीं रहा करते थे।

प्राचीन काल में दिल्ली के पास ही एक बहुत बड़ा सगर या ! उसका नाम हरितनापुर या ! वहाँ का राजा दुर्योधन ध्रवने चर्चरे भाई पाँची पाण्डवों से वहां ईच्ची रखना या ! दुर्योधन के द्वारा क्षष्ट पाकर पाँची पाण्डव सपनी मावा कुन्ती के माय संकर वहाँ से चले गये ! वे देश बदल कर एक गहर में एक











२२-महारानी कुन्ती की सज्जनता (२)

एक दिन ऐसा हुआ कि भीमसेन तो अपनी माता के पास रह गया भीर शेष पारी भाई भिन्ना लेने पले गये। अकस्मात् ब्राह्मण के घर से रेाने पांडने का शब्द सुनाई दिया। कदन की सुनते ही कुन्ती ने ब्राह्मण के घर जाकर देखा ते ब्राह्मण अलग रो रहा है, ब्राह्मणी अलग सिर पींट रही है भीर उनके लड़के अलग बिलबिला रहें हैं। कुन्ती ने उनसे रोने का कारण पूछा, परन्तु रोने पाने में कौन किसी की सुनता था।

जय कुन्ती ने बार वार राने का कारण पूछने का लिए हठ किया तप प्राह्मण ने कहा-- "माई क्या पूछती हो क्या बवाऊँ! वह घुरा दिन काज का ही गया कि या ते मैं स्वयं उस राजस के पास जाऊँ भीर छो-पुत्र की सदा के लिए दुख-सागर में निमप्र छोड़ जाऊँ या इनमें से किसी की मेजूँ।

हम पर में कुल पार प्राची ठहरे। वताभो, किसे राखस का भोजन वनाऊँ। यदि हममें से किसी एक की भी जान गई तो प्रेप तीनों तद्दप तद्दप कर मर जायेंगे। इससे दो यही भच्छा कि हम सब पारों एक साथ उसके पास पत्ने जायें धीर वह एक साथ हम मयों की खा जाय।"

माद्राय की पार्वे सुन कर कृत्वों ने कहा---"यदि इतनी द्यां बात दें तो कुम क्यों राते हो ? मेरे पाँच पुत्र हैं। मैं उनमें से एक को राज्य के पास भेज दूँगों।"



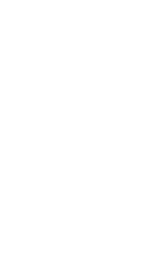
२२-महारानी इन्ती की सबनता (२)

एक दिन देखा हुमा कि मीनवेन के मानते मादा के पास ह गया मौर केर पारों माई मिया होने पते गये। मायलाद एक्स्स के पर से रोते पीटने का क्या सुनई दिया। रहन के हुनते ही हुम्बी ने बाह्य के पर आकर देखा के बाह्य मास्त के रहा है, बाह्यों माता सिर पीट रहा है मौर उनके सहसे माना विल्वित रहे हैं। हुम्बी ने बनसे केने का कारस पृक्ष, रहात रेले केले में के बाह्य विल्वों की सुनक सा।

बद हुन्ती ने दार दार ऐते का कारय पूदने का तिए हठ किसा तर माम्य ने कहा—मिर्म क्या पूदाने हो क्या दहाते ! दह हुस दिन माद भा ही गया कि या तो मैं स्वयो दस सकत के पान कार्ड मैंगर कोन्द्रया की मदा के दिस दुखन्तातर में दिसम होड़ कार्ड या इनमें से किसी की मेर्यू !

इस घर में हुए बार प्रायो टहरे। बारफो, बिसे रावस का सोट्य बहाई । यदि इसमें से किसी एक की मी बात गई देतियो तीने दहन दहन कर सर वार्षी। इससे देतियही सन्दर्भ कि इस सर बाटी एक साथ दससे पास बहे वार्षी सीर बह एक साथ इस सबें की का वार्षा।

बाहर को बाउँ हुन कर हुन्दों में बहा-भाराहे हटती हो बाद है से हुम बची रिट हो मेरे चीप पुत्र हैं। मैं उससे से एक बार क्सा के रामा मेट हुंगे



ति नाणमं के समीद भेजने का सारा मुतान्य कुन्दी ने अको कह सुनारा।

शास्त्र के साथ सहते के तिए भीमतेन का घडेला ही काता मुन कर दुप्तिष्टर की घड़ी पिन्दा हुई, उनके मुख्य पर वहांगी हा गई। वे मन ही मन हैंग्बर से घपने माई का कुशर भगाने सारे । उन्होंने कहा—"भीम की धकेला न अवल पाहिए या।"

पुरितिश की जिल्हा में पड़ा देख कर कुल्हों में कहा— पुत्र, हुम जिल्हा स करें। भीम के घर की में जानती है कि किन्सा है। हुम नहीं जानते। हुमको समके परावस पर पूरा भरीता है। दह कहाय उस राजन को मार कर सकुशन पहीं भाषाया।

प्रभेग महाप की प्रसिद है कि की निर्मा की कहा में हैसे ते। कहाँ तक ही सकी प्रमंदी सहापता करें। की महाप दूसी के दू सामें सहापदश करते हैं, प्रशोध सदा करनी सहापता करता है। हुए प्रशासी मता। मैंने की भीना की सेवा है ते। शाम्य भीर प्रमंदी कान्यक्षी के माथ क्यांत के जिस सेता है।

मुख यह हर दिश्यास है कि पामेश्वर हमकी सदाय सहा-दल कारण दस राष्ट्रम के मार कार्य स सार मरस्थीरहासिदी के पास हर कार्य-

र बार हा हो तहा हो कि इसके साम्या का बार का कार्यक्र कीर कारण क्रियोग का राज्य का साम्या



को शक्षम के समाद भेजने का मारा युक्तान्त कुन्ती ने इनको कह सुनाया।

राएन के साम रहने के हिए भीननेन का भकेता हो लाना मुन कर पुषिष्टिर की दही चिन्ता हुई, उनके हुए पर इहासी हा गई। वे मन ही सन देखर से अपने भाई का कुगल सनाने रूपे। इन्होंने कहा—"भीम की अकेता न भीनमा पाहिए था।"

द्विशित को जिनता में पहा देख कर कुनतों में कहा— पुत्र, हुम जिनता न करें। भीम के पत्र को में जानतों हैं कि किनता है। हुम नहीं जानते। सुभको जनके परायम पर पूरा भरोगा है। हह कावाय जन राज्य को मार कर सकुरत पत्री कालपा।

पार्यक महाया की शर्मन है कि जो किसी की कहा में देखें तो जहां तक हो। सकी कमकी महारहा को । जो महाया हुमते। के हु सामें महादश कार्य हैं, परमाशा सहा हमकी महादश करना है। तुम भरमामा महा। भीने जो भीना की भेजा है तो मामर भीत हमके शहनदशी के बाद स्थाने के जिस भेजा है।

युक्त पर्द हर विधास है कि प्रशास हमको ब्राटाय सहा-दश काला । इस राष्ट्रस के द्वार क्लब स सार उत्तर-विश्वासिक के साह दल गाँचे।

र बार हा हा रहा हा कि इस्त्र व राष्ट्रण का बाद कर जानताव और बाहा - बाबस्त्र के राष्ट्रण का बाद हा



को राष्ट्रम के समीद भेतने का मारा पृत्तान्त कुन्ती मे इसको कहसुनाया।

शस्त्र के साथ एड्ने के लिए भीमसेन का अकेला ही जाता शुन कर पुथिष्टिर की बड़ी बिन्ता हुई, उनके हुन्य पर उदासी छा गई। वे सन ही सन ईश्वर से अपने भाई का कुश्ल मनाने लगे। उन्होंने कहा—"भीम को अकेला न अंजना पाहिए था।"

चुचिष्टिर को पिन्हा में पहा देस कर कुन्हों ने कहा— पुत्र, तुस पिन्हा स करें। भीम के वर्ज को में जानती हूँ कि क्लिना है। तुम नहीं शानते। सुभको उसके परावम पर पूरा भरीसा है। वह कावाय उस राष्ट्रस को मार कर सकुरान पहीं कालाया।

प्रापंक गतुम्म को स्थित है कि यो किसी को कह से हैसे के सही तक ही सके इसकी सहायहा करें। यो महुस्य दूसरी के हुआ में गहायहा करते हैं, परमोग्न महा दनकी महायहा करता है। हम प्राप्ता सह। मैंने की भीम की भीका है हो काक्ष्म भीर राज्ये बाहनाकी के प्राप्त बनाने के निस्त भेका है।

मुखे पड़ हर दिशास हैं कि पामेपर हमको सहस्य महा-दल कोला। यस राष्ट्रम के सारे करने से सारे राज्य-निहासिये। के पाद क्य जारेंग (1)

य बार ही ही हते की कि इत्तर में साहण की मार कर सारवार कीई बादा - मानवार ने राह्य की बादा है।



धीर हर्षे में हारका टोक टोक मृत्य वता दिया। माएक ने देगानहारी। eri पुणके सं दाम निकाल कर इसके सामने रस दिया। FT

लड़का जब कापड़े की ग्रह करने छगा ग्रह देखा था कपड़ा एक आह से कटा हुना या। यह देख कर हसने माहक संबद्दा—"भार्र देख हो, बाभी कह देनी बारुद्धा है, करहा यही पर तीनव का बता हुआ है। में तुमको जताये देता हैं। पीले

सं दश म बहना कि सहके में हुओं. धारन है दिया हर बाहक म देख कर कपहा हैगटा दिया कीर बादने दाम ir De , बरों पर दुवानदाव भी देश हुम्मा दे बाहें. सुन रहा

का। एक्चे की बात होने कर वह बहुत दिलहा । दसने स काल समर्थ दिया की मुलाबा और दससे कहा-भिक्तात सरका का कार्याद की र कुछ है। दुकाल-हात है, करत का दर्श है। दह शांत देवता नहीं कानहा । यह

कार राष्ट्र कर है कि राज के बाद हुए की बाल कर लें। कोरहार का दह कार गई। कि बाल के ली की देत हारहरी Country or and the an about a daily

en all all the case of the an tender call of all or or car of



से पार प्रवार दी माँर यह विचार कर लिया कि यहुमा को सपने राज्य की सीना दनायें। यह देख कर उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड मिन्टों ने सर चाल्ते मेटकाक की उनके पाम भेजा। महाराजा ने सेटकाक साहय का यहा भादर-मत्कार किया भीर कुछ सीच समम्भ कर चैंगरेज़ों से मेल कर जिया। सन् दिल्ह दीवा में उन्होंने सन्तज के पार से भवनी मेंना लीटा ली।

रस्वीतिमिष्ट के पराहम के भागे अकृगानितान के पठानों को भी अपना सिर मीचा करना पड़ा। इन्होंने कादुन के बाह्याई शाहगुड़ा में कोहनूर होरा ने निया था। इस होरे को से सर्वहा भयने पास ही रसते थे।

इनके पास सब मिना कर कोई दो लास दस इहार सेना थी। भपने सैनिकों को युद्धविद्या सिसाने के निए इन्होंने सूरप के बहुत से लोग नौकर एवं छोड़े थे। उनमें हनएस बेनपुरा मुंगीसी सबसे सुमय थे।

रहाजेडिनिंद शिन-शैन में सेटें में। इनकी एक माँग भी मीडिल के कारम नह हो गई मी। इनकी माइनी में ऐसा में दौर रस टरकड़ा मा कि युद्ध में इनके मामने कोई न टहर न सकड़ा मा। भारी में भारी विश्वति में भी ये कभी न दो दिवनड़े में।

्रतको राज समा के भीर समासद ता घरते बारत करहे. तहर कर घाषा करते के रास्तु वस्तव साधार्य हो हस



महाराजा रएजीवसिंह। के पार द्वार हो भीर यह विचार कर द्विया कि यहना का धपने राज्य की सीना इनावें। यह देख कर उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड मिन्टों ने सर पार्ट्स मेटकाफ को उनके पास भेजा। महाराजा ने मेटकाफ़ साहद का बढ़ा धादर-मत्कार किया और कुछ सीप नसके कर बैंगरेज़ों से मेह कर तिया। सन् १८०६ ईसवी में इन्होंने संवतन के पार से घपनी सेना लौटा ली।

रदर्जाटिमें ह के पराक्रम के बागे बक्जगानिमान के पटानों को भी भारता सिर नोंचा करना पट्टा इन्होंने काहुत के बादकाह साहगुला से काहनूर होता के जिया था। इस होते का यं सर्वेहा करने पाल ही रखते ये।

इनके पास सब निजा कर कोई दी लाग दस दलार संता यो। करने नीनेको को उडिया निगतने के जिए स्होंने दूर के बहुत में लोग मीकर रख खेट थे। उनमें जनरल बेनपूरा कृतिको नबने दुन्द है।

स्दर्शनिह होत् होत में होते हैं। इनकी एक फ्रीस भी ग्रीवद्धा क कारद नष्ट हो गई भी । इनको बाकृति से ऐसा पि सम् टरकता था कि पुत्र में इनक सामने कोई स टहर भारं सं भारं विस्ति में भी दें कक्षीन राक एवं सम् क है। सबस्य से एवं केन्द्र करने

وما من مناو مناع و مناو مناور ما وم



सवी में ७ जून के सन्ध्या समय १८ वर्ष की अवस्या में

२६—चुराई के वहले भनाई।

रक दिन एक टाइर नाइर करनी चौनाल में कैठे से। में एक मेल हारा सका भूगा प्रामा व्यर मा निकला हर हो के कहते समा क्षेत्र के नार नेता देन

क्लटा है, कुछ कार्न की निल्ल लाव, जिल्ले कार्ग पतने का हाता हो।" टाहर ने इसे स्टिड्ड एर कहा, "पड, यहाँ र हिंद साने की कुछ नहीं है। " दर उस देवार ने कहा, "सीड़ा हों तो ही किला देगें। टाहर साहिद मार्च से बाहर हो गर्द कित कहने हती, 'दू पहाँ से टायम कि नहीं; वहूँ वैधे हते हर्रित्तों तेह हूँ !" पर सुन कर बढ़ देखारा अपना सा कुँह

हर पोंहें ही दिन पींडें टक्ट नाहर फिसर की बन में ति। वहाँ राहे मूल त्ये केंग्र महक्ते महक्ते एक महिन्दी के ल का निकतं रात बहुत केत गाँ की कीर बनका गाँव बहुत े या इसमें मोपड़ा के सामेक में उसके घरने दहीं दिका तकं दाम क्या के वा कार्र क्या देवा हर हे हैं वह साहर में पुक्र देर इनके से में के दिए एक देखा का कार से







क्षेत्र करके ने इसका टॉफ टॉफ मून्य क्या दिया। प्राह्म से ुरक से टाम टिकान कर उसके मामने उस दिया।

शरका जब काई की दह करते जाता दह देखा है। इन्हार एक जाई में का दुका का ! यह देख कर उन्तरे माहक सकता मार्थ दक्ष में काल कह देश करता है, करहा यहाँ ए। तोक सा काल दुका है भी दुक्को जाए देश हूँ ! ऐंदें १) एहं सकता है जह काल हम होसी है हैं

त्तर्थ सहस्र ४० ४० हा सीत प्रशा कीर क्षाप्त हुन्य ६ १४४

स्व १ क्षेत्र । यस्ति ह्यास्य स्व स्व स्व राजस्य के स्व १० कास्य स्व स्व स्वय १ कास्य के साथ स्वर के स्वयं स्व

ा वाक का क्या के मूख है हुक्य के के के का मार्ग के उनक्किया हो है स्वाक के का का क्या का का साम का मार्ग के सा का क्या का का साम का मार्ग कि सामक का क्या का साम का मार्ग हुए हुए। कि सामक का का

तिया । हा हुए हुए हुए हुए। भर हा हाह राज्य व हुए हुए हुए हुए राज्य हुए हुए हुए हुए

لوست د ش- مذ چه حد د



त । श्राप्तान सब धादमी इधर एधर भागने लगे धीर धार धरराष्ट्र सच गई। रेगने से जान पश कि एक रा हाथो बन्दन तुष्टा कर भूमता हवा भागा बला है। जिसका गृह जिया की बता वह बयर की भाग त । इस सम्बर् के एक छोटा बग्पा अहिन की लोइ से ब्हा, हुन्दी बहुत प्राय का रूपा , दूराचे के प्राय सकड़ से ह दिशा है कार्च बचाते का साहस स दिया। बक्या ब रेंडे बे देंचे इंडरे हो की पा कि एक बादमी से दौड़ हत राह है हुए दिहा कीर हाधा की मुँद की हुयेंट से रहर कर जिक्का रुक्ता । अक्ता प्रकर दर्जे ही समसे) कर कमारा स्टाहर हराको दशका गिर दशा । राज्यपुत्र का green er eine egennen bet nach etwa e che co tra liga di e trici limita e le che le che e e ત્રા હજુ રજૂરાજી હૈત્રન કરાજ ના કૈકાય the second contract of the con one en en en en en en en The services continued the

tell of a me distan



महाराजा रामिनेंड भीर एक दुढ़िया को कहानी। पृश् वेरिक भीर कोई न या। महाराजा प्यास से व्याकुत वो हो रहे थे, पहुँचवे हो दुढ़िया में दोलें—"माई, घोड़ा सा ठंटा नी पिजा दे।"

यह सुन कर बुढ़िया ने उठ कर बड़ से भरा हुमा एक हो का वर्तन ला रक्सा। इस ग्रीटल बड़ को पान करके हाराजा को प्यास बाठो रही। बड़ पीकर वे इस स्थेपड़ी में हारान करने लगे।

कुछ देर भारान करके महाराजा बुढ़िया से पृक्षते सने बुन्हारे कीर्द में भी १ इस जनज में बुन्हारा निर्वाह कैसे होता १'' बुढ़िया ने बचर में कहा—''बेटा, मेरे कीर्द नहीं हैं। एक व या, परन्तु कारह वर्ष से जनका भी पता नहीं, न जाने हों पता गया। मैंने एक कार सुना या कि महाराजा सिनिंद्द के यहाँ एक पहाडों दुने से रहता है।

भेरे साने पीने का कोई सामरा नहीं, यहाँ पैठी हुई मैं तिप्रों को उन विनास करना हूँ जो किसी ने कुछ दे दिया। ति कमा जान की नकड़ा या जहां पूरा कुछ। दिक तर्थ के तमा न नश्म प्रश्न स्थान पहने कराना हूँ ना सब से दिखा तह भी नहीं होंगे। तमा में ति ने तमा में हैं कि पासपा तकत करा हु की भी तमा कह है। तो के प्रशास कर से

्हिता केहें कर पूर्वण राजना । ११ इस कर सङ्ग्रह



महाराजा रामिसिंह धीर एक बुढ़िया की कहानी। ५१ ।रिक्त धीर कोई न था। महाराजा प्यास से व्याकुल तो हो रहे थे, पहुँचने ही बुढ़िया से बोले—"माई, बोड़ा सा ठंडा ी पिला दे।"

यह सुन कर बुढ़िया ने उठ कर जल से भरा हुआ। एक ट्री का वर्तन ला रक्खा। उस शीवल जल की पान करके ाराजा की प्यास जाती रही। जल पीकर वे उस भोपड़ी में राम करने लगे।

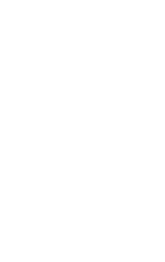
कुछ देर ष्राराम करके महाराजा बुढ़िया से पूछने लगे पुन्हारे कोई है भी ? इस जगल में बुन्हारा निर्वाह कैसे होवा ?" बुढ़िया ने उत्तर में कहा—"वेटा, मेरे कोई नहीं है। एक र घा, परन्तु वारह वर्ष से उसका भी पता नहीं, न जाने हाँ चला गया। मैंने एक वार सुना घा कि महाराजा मसिंह के यहाँ एक पहाड़ी दुर्ग में रहता है।

मेरे खाने पीने का कोई धासरा नहीं, यहाँ बैठी हुई में तियमें को जल पिलाया करती हूँ। जो किसी ने कुछ दे दिया । कभी जंगल की लकड़ी या जड़ी बूटी कुछ विक गई तो मी से लस्टम पस्टम धपने दिन काटती हूँ। सो ध्रव मेरे कियं ह भी नहीं होता। इस समय में ऐसे दुःख में हूँ कि परमेश्वर । करे कि शत्रु की भी ऐसा कष्ट हो। पुत्र की वियोगांत्रि मुक्त बलग ही जलाया करनी है। "

इतना कह कर बुाढ़या राने लगी। यह देख कर महाराजा







६२—प्रतिज्ञापालन (१)

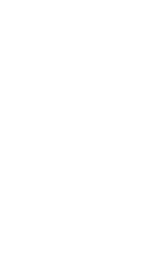
श्चारती के भीत प्राप्त को भन्नत ने भाने भविकार हे कर हो निये के एक साजहानता ही क्यां हुआ था। यह इसे शामेल पाएल था। यही मीप कर उसके एक बार राजहान्ये पा भी धारा कर दिया। एउ दुढ़ हुआ।

की गानत भागी मूर्त की रहा के तिर सहे ही को नवार में, पान्तु भागत में उनके पाँव उपाद ही गये। राज्यों का नारार राष्ट्र प्रशासित भागते बानवारों की मेक्स किसे बहुत में का दिया।

चार राष्ट्र(की) में उसने राष्ट्रिय सह पूर्व की कि के के मानके काष्ट्र सुरने में दुद करते, परस्यु हों, कमी कमी करिने कीर को में में निकल निकल कर हुएने पर का दुस्ते कीर युर मार का निस्त नीट कर जा दिस्से ।

स्थी नक्ष्में में स्पृतिनित् राम का एक बहु स्था की नक्ष्म का उसने मा कैंद्र गास्त्र स्थान की तरह कृत तार क्ष्म का नित्य कैंद्र गुल्लेखा में इसना नाम गांका का कि का का साम्यादाने का हरूद उसका जान का ता का साम करा का सुना अन्याक का का ते केंद्र जा गांक का तार का साम्यादान का मान में का का की ते

The state of the s



। परन्तु रपुपितिसंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन की सा से विकल हो रहा था। इसलिए वह साथियों के ो की सुना धनसुना करके पर की धोर चल ही दिया। रपुपितिसंह जय सायङ्काल के समय धपने नगर में गा तब देखा कि समस्त नगर में सन्नाटा द्वाया हुआ है। के द्वार पर जाते ही पहरेवालें ने टोका—"कीन ?" रपु-सिंह ने निहर हीकर कहा—"रपुपितिसंह।"

परंवाले ने कहा—"वादशाह की भाशा है कि तुम जहाँ ो मिलो पकट़ लिये जाभो।"

रघुपितिसिह ने कहा—"भाई, मेरा पुत्र बड़ा धीमार है । समय उसकी घटी युरी हमा है। कुछ काल के लिए सुके पर जाने हो। मैं सभी देख कर लीट स्नाना है। फिर तुस हे जी करना समस्य रहे कि में राज्यत्र है सीव्य-सन्तान समय कभी न कहेगा

पत्रदेशम् स्पिणा स्व प्रकार कर शहरात शहरात का समा स्वरंगी ताम भाषा मा त्व प्रमासन्य स्वक स्व क्यांना । बहुत रागी भा अपूर्णतम्बत का क्रम्या स्वस्ता यात क्षर उसका सा हृदय प्रदान गरा भासन्य १ का पाद रेक उसमें एक सम्या साम जकर कता — से. जाना प्रभावन

्त्रय राप्पतिभित्र भातर स्थाप्ता हररा कि जहका रारा कारम विकल ही रही है। उसका माना उसका जनस्म



जार्ये। परन्तु रघुपविसिंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन को लालसा से विकल हो रहा था। इसलिए वह साथियों के कहने की सुना बनसुना करके घर की झोर चल ही दिया। रघुपविसिंह जब सायहाल के समय छपने नगर में ,पहुँचा वह देखा कि समय हा है।

के द्वार पर जाते ही पहरेवाले ने टोका—"कौन ?" रधु-सिंह ने निहर होकर कहा—"रघुपतिसिंह।"

पहरवाले ने कहा—"वादशाह की भावा है कि तुम जहाँ र मिलो पकड लिये जामों।"

रघुपितिसंह ने कहा—"माई, नेरा पुत्र बड़ा चोनार है।

समय उसको बड़ो दुरो दशा है। कुद्य काल के लिए सुके
वर जाने दे। मैं भर्मा देरा कर लीट भाता है। किर तुम
हे जो करना। स्मरट रहे कि मैं राजपुत्र हूँ, चित्रय-सन्तान
भन्नद कभी न कहूँगा।"

पहरेबाजा सिपाही जब घर छोड़ कर बाहराह की सेना भरती होने भाषा था तब इस समय इसका भी पकड़ीता । बहुत रोगी था। रघुपतिसिंह की करूटा-रम-भरी बार्वे नेकर उसका भी हृदय पियल गया। भरने पुत्र की पाद रके उसने एक सन्तां मोम नेकर कहा--"भैया जाओ. व भाषों..."

ंत्रव रघुपतिभिन्नं भीतर राया ते। इत्या कि जहका राग सारद्र विकल हा रहा है। इसका माण करका उत्तक स



३४-प्रतिज्ञापालन (३)

इस घटना की हुए ध्रमी कुछ ही समय योवा होगा कि गाहियों का सरदार कुछ सैनिकों की साथ लेकर उधर ध्रा क्ला। उसने घाते ही पहरेवाले से कहा—"रपुपतिसिंह का ग समाचार यवाची।"

न जाने रघुपविसिंह के घर प्राने धीर किर लौट जाने का माचार उसे कहाँ से विदित हो गया था। पहरेवाले ने भी व वृत्तान्त सच सच सुना दिया। सरदार ने रघुपतिसिंह के इ देने के धपराध में पहरेवाले की बांध कर केंद्र कर दिया ार उसके द्वार पर दोहरा पहरा बैठा दिया।

रपुपितिसिंह को यह बात ज्ञात हो गई कि मेरे छोड़ देने-ला कैंद कर लिया गया है। यह सुन कर उससे न रहा गया। ह तुरन्त रात्रु के सरदार के पास धाकर उपस्थित हो गया। युपितिसिंह धीर उस पहरेवाले सिपाद्दी दोनों की मारने की गज्ञा हुई।

दूसरे दिन प्रात काल ही सिपाही धीर रपुपितिसह दोनी गय पाँव पेंथे हुए सामने खड़ किय गय। उनके पास दे। खाद नङ्गा तलवार लेकर खड़ हो गय। वे आझा की बाट ख हो रहे थे कि इतने से बहा पर उन सिपाहिया का सेनापित जा पहेंचा।

संनापित ने रघुपितिसह का झार उँगला उटा कर कहा — 'सिपाद्विया, तुम जानते हा यह कीन हैं ? यह रघुर्यातीसह हैं



व्रव समा किया। जो मनुष्य ईरवर से नहीं बरतावह सिपाही हो नहीं। " इतना सुनते ही पहरेवाला सिपाही ध्रानन्द में मप्र हो गया। हाय पाँव वैंथे होने पर भी वह वादशाह के चरवों में जा गिरा।

फिर वादशाह ने रघुपितिसिंह की भ्रीर घाँख उठा कर कहा—"मुक्ते पहले इस बात का झान न घा कि घ्रवीर राज-पूत भपनी प्रतिज्ञापालन करने के लिए ऐसे बीर होते हैं। मैं तुन्हारे परिश्रम, घ्रवीरता धीर प्रतिज्ञापालन से बड़ा प्रसन्न हुझा। जाथों, मैंने तुनकों भी चना किया। यदि धव भी तुम मेरे साथ प्रतुता करना चाहते हो तो जाग्रो, राखा प्रतापसिंह से जा मिली।"

रपुपितिसंह बढ़ी धोरता और निर्भयता से कहने लगा— "जिस रपुपितिसंह को इतना परिश्रम करने पर भी धाप न जीत सके थे, धाज धापने धपने हृदय की ड्दारता दिखला कर उसे जीत लिया। यथिप धाप मेरे शत्रु हैं, तथािप धापकी गुय-प्राही जानकर में प्रतिहा करता हूँ कि ध्रय में कभी धापका राजु धनकर तज्ञवार न उठाऊँगा।"

जो मतुष्य ध्रपने वचनी धीर प्रविद्याओं का पालन करते हैं धीर सत्य पर हड्वा से जमे रहते हैं धीर दूसरी के दुःखी में सदा इनकी सहायवा करते हैं, परमेरवर सदा उन पर प्रसन्न रहता है धीर इनकी सहायवा करता है।

पद्यभाग

१--कथीर की साखी

जो ते कुँ काटा सुदै, साहि बोइ तु फूल। ताको फूल क फूल हैं, वाको है निरमूल ॥ १॥ दरवल की न सताइयें आकी मोटी द्वाय । मई खाल की स्वाम भी, मार मममदी जाय॥२॥ या दुनियों में ब्राइ के, टाड़ि देइ नु ऐंठ । सेना है सी लेंड लं, उठी जात है पैंठ ॥ ३॥ हेनी बानी बीडिये, मन का चापा सीय । चौरन की शांतज करें, आपी शीतज होय।। ४॥ द्या कीन पर कीतिये का पर निर्देश दीय । सार्व के सब जीव हैं, कीरी कुंतर दीय।। ५ ।। जहाँ दया तहें धर्म है, जहां श्रीम नहें पाप । अहा कीच गर्ड काल है, जहाँ खमा वह साप ॥ ६॥ मांच दरावर नय नहीं मूळ बरोबर पाप। जाके दिग्दय सांच है, ताक के आप ॥ संगति कीने साधु की, द्यांन्यंभ्यमित वर्ष

फाल करें से। घाज कर, घाज़ करें सो घव। पल में परर्ल होयगी, बहुरि करोगे कव।।स। हुर, जो देखन में पला, हुरा न दीखे कीय। जो दिल ग्योजी घापना, सुभसा हुरान कीय॥१०॥

२---क्यीर की साखी

जिन खोजा विन पाइयाँ, गदरं पानी पैठ। हीं धारी हुँदन गई, रही किनारे बैठ ॥१॥ माहब के दरवार में, कमी काहु की नाहिँ। बंदा मीज न पावती, चूक पाकरी नाहिँ ॥२॥ साहब तुन न विनारियों, लाग लोग निल जाहिं। इमसे मुमका पहुत हैं, मुमसे इमकी नाहिँ॥३॥ डाको राग मार्या, मारि न सकिई कीय। दार न दांका करि सर्के, जी जग देशी होय॥ ४॥ साहय सें सब दोव दें, बंदे भी कहा नाहिं। राई सी पर्वत करे पर्वत राई माहि ॥४॥ दुरा में सुनिरन सद करें, सुख में करे न कीय । सुख में जो सुमिरन करें, दूगर काहे की दीव गर्गा एक्टिसापे सब सपे, सब साथे सब जाय। ता तु सीचे स्वकं वृत्वे कर्न छ्यार



क्षरे दिरस जं काहु की, ता में लद मर दान।
पर विदा की हिस्स पर, जासी दी जग मान।।।।।
प्रीति दीति दुर्ग मूल दी, में कीन्द्रीं निरधार।
प्रीति मली मगवान की, जाते दी मवपार ॥दा।
मली न जग में बास कीड, बास दुःख की मूल।
पर सुरु पितु के बास में, मिटे क्लेश की सूल।।।।
पुरी मीगिबी जगत में, जाते दी घपमान ।
समा मीगिबी ईश में, मली पही कर कान।।१०॥

४---ध्रम और संपत्ति

[सुकृत्दलाल शाकां-कृत शिखाकौगुरी से]
जे जग में अम हैं विविध, विशाधन पित लाइ ।
संघिँ करिँ सुजान से, सुरा पाय मन भाइ ॥१॥
अम से विधा पाइये, अम दी से धन दोह ।
अम दी से सुख दीत दें, अमित लहे न फोइ॥१॥
अम दी से प्रिधकार पुनि, लहत सतुज द्यायकाय ।
विन अम कारज दोय निहें, अमे से दुःस नसाइ ॥३॥
अमी पुरुष संपति लहें, अमी सुयश धार धाम ।
अम दी से या जगत में, द्यान लहें धामराम ॥४॥
अम करि जे विशा पहें, मनुज मान तिज धाइ ।
त सुख लहें धायस थिन, सर्पान धामस पाइ॥ स्तु सुख लहें धायस थिन, सर्पान धामस स्वस् पाइ॥ ।

संगति ही से लोक में, मिषक होई विस्तास । संगति दिन या ज्याद में, होई प्रतीत दिनास ॥ १७॥ संगति से व्यवहार सब, सर्वे लोक पर लोक । दिन संगति के होते हैं. राजसमा मे रोक॥ १८॥ इंदि सारद उत्तम पुरुष, श्रम कर जोरें दित । इंदि सारद उत्तम पुरुष, श्रम कर जोरें दित । इंद्र समय में बहुत सुख, मेंगों सदा सुषित ॥ १८॥ स्विक लाम से देश पुरुष, सब करहिं मन माइ । परीई दिगति की सानि में, दुनि पीदो पदिवाई ॥२०॥

५--विद्युरनीति

[बादु गोपाहवन्द्र दरनाम गिरवरदास भटुवादिव]
नरपाँव नसव कुमन्त्र सी, साधु कुसंगवि पाय ।
विनसव सुव मांव प्यार सी, द्विज्ञ दिन पड़े ननाय।।।।
पावक वैरो रोग कान, मनमें हुँ प्रतिय नाहिँ।
में भोड़े हूँ बड़ीहँ पुनि, महा पठन सी जाहिँ।।।।
लाम भरित मवरान नहीं, ठर नहिँ पल समान
होरस वहिँ मन-पुद्धि मम, विधा सम धन मान।।।।
जा में पुन मवरोडिये, मरिव वहि सौकार
बाह-यवन हैं करिप दो, होय नोठि महनार ।।।।
मकत वन्द्ध संग्रह नहीं, जावे केष्ट्र दिन काम
समय पर्व पर ना निही, माहो वरवे दम।।।।



विदुरनीवि ।

ξ,

संगित हो से होक में, मधिक होड़ विस्वास । चंचति विन या जगत में, होइ प्रतीत विनास ॥ १७॥ संपति से व्यवहार सब, सबैं जोक पर लीक। दिन संपति के होत हैं, राजसभा में रोक॥ १८॥ इहि कारए उत्तम पुरुष, श्रम कर जारें विस्त । दृद्ध समय में बहुत सुख, भीनें सदा सुचित ॥ १५॥ ष्मिकताम से ता पुरुष, सर्व करिं मन भाइ। ग्रहिं विपति को स्तानि में, पुनि पोद्धे पद्धिताई ॥ २०॥

५—विद्**र**नीति

[बाबू गोपालचन्द्र उपनाम गिरघरदास भनुवादिव] गरपवि गत्तव कुमन्त्र सी, साधु कुसंगवि वाप। दिनमत सुव बाति प्लार सी. द्विज बिन पड़े नसाय॥१॥ पावक देरी रोग इन, नपनेहुँ रालिय नाहि। पे घाहे हैं बड़िहें पुनि, महा पवन सी जाहिं॥२॥ लाम सहित मन्त्रान नहीं, वर नहिं पल समान। वोरद नहिं मन-मृद्धि मन, विदा मन पन जान ॥२॥ का में शुन प्रवहीकिने, करिय वाहि स्वीकार। बाल-बचन हैं करिय जो, हार नोति बलुनार nyn नकत बेख संमह करें, बार्व केंग्र दिन काम ।

मय पर पर ना मिने, माटो ग्रस्चे हाम ॥१९







क्षिति सबै गति ईग्र की, कर न कहरूँ पाप ।

समिति पराचर कात की, देसत है वह स्थाप ॥ ॥

सुन के दुर्कन के बचन, हो रहिये चुपचाप ।

करें को समता सामु की, नीच कहावे साप ॥ ॥ ॥

स्ट कहरूँ नहि बोलिए, सूठ पाप कर मूल ।

सूठे की कीड कात में, करें प्रतीति न मूल ॥ सा

७-रामचन्द्र का गेंद्र खेलना [रामधीलका से] **एक काल फार्वि क्रम नियान** वंत्रन की निकरे चौगान ! हाय बनुष झति सुन्दर रूप. संग तिए सब सोदर भूप ॥ रोधी सद घसवारिन मर्स. हव हाधिन सें! सोहत खरी। वर-मुंद्रन सी सरिता भती: मानी मिलन समुद्रहि वसी॥ यहि विधि गये राम चौगान: सावकाश सब भूमि समान। शोमत एक कास परिनान रच्यां रुचिर वापर चौगान ॥





















शक्तवितेष्ट । **≏**> भ्रपनादाई पन्नाकी संरचतामे महलों में रहता घी। एई दिन जैस हो प्रमाने उदयसिंह को स्थिला पिलाकर सुलाया,

पूछा— "यह कौन रोता है ?" नाई ने घयरा कर कटा-"राना बनवीर ने विक्रमाजीत की सार हाला।" इतना सनते ही पश्रा घर घर कांपने लगी। यह सावन लगी कि बनवीर से जब विक्रमाजीत की सार झाला, तब उदय सिंह की कब जीवा छोड़ सकता है ? उदयसिंह के जीविं इहने पर सदा उसे यही रांका बनी रहेगी कि बढ़ा होकर कई

वैस ही सहला से कुछ राने पीड़ने का शब्द सुनाइ दिया पन्ना ने नाई स जी उदयमिह का जुठा उठाने सामा था

बष्ट इससे राज न छीन से ।

दय से चनेत्यां स्वामिमित्तः विराजमान यी । इसलिए धपने के मश्ने का बसे कुछ भी शोक म हुझा । पन्ना वसी समय तिरंह को टेकिंग से दिया कर नाई को साथ लेकर चिर्चार जवल खड़ो हुई । वे दोनों कमलग्रीर के टाकुर के पान जा थे । बसने बदयसिंह की बहुत झाराम से स्वस्ता । वहीं दिसंह कहा होने पर चिर्चार का हाजा हुझा ।

१-भले पुरे की पहचान

a car er air t qua a it ce t in er en

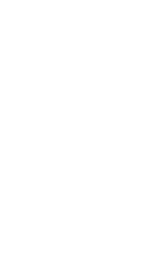


इद्द में भनेत्सां स्वानिभक्ति विराजमान थी। इसलिए अपने द के मरने का बसे कुछ भी छोक न हुमा। पन्ना वसी सनय द्यसिंद को टोकरों में छिपा कर नाई को साथ लेकर विचौर निष्म सक्ते हुई। वे दोनों कमलमीर के ठाकुर के पास ला हुँचे । बसने बद्दसिंह की बहुठ आराम से रक्सा। वही द्यसिंद बड़ा होने पर विचौर का राजा हुमा।

४-भले वुरे की पहचान

जिस परमेश्वर ने इस सबको पैदा किया है और इसारे रिए तरह तरह के पदार्थ संसार में पैदा किये हैं वह यही पाइता है कि समी मनुष्य धर्माला, सज्जन सीर परोपकारों हों। जिस प्रकार माता-पिता ध्रपने पुत्र से बहा प्रसम रहते हैं और इस पर बड़ो ह्या दिखलाया करते हैं, इसी प्रकार परमाला भी धर्माला, सज्जन और परोपकारी मनुष्यों से मदा प्रमाला भी धर्माला, सज्जन और परोपकारी मनुष्यों से मदा प्रसम रहता है और बनको सहा सहायदा किया करता है।

परसंघर में इसारे हृदय में एक ऐसी शांकि दों है कि जब इस केंग्ने काम करते हैं दर वह तुएन्त दरता देती है कि यह काम पर्म है या सप्तमें, सम्दार्ग है या दुरा। जब इस कोई ऐसा काम बर बालते हैं कि जो इसे करना कर्नुबित या दव इस पीड़ें बहुत पर्याप्ता करते हैं। इस समय इसारे हृदय में एक प्रकार का यहा हता करता है। इसका कार्य दही है कि वह गांनि



हर में बानेको स्वामिशीत विराजमान मी । इमलिए सपने बंगाने का इसे कुछ भी सीक म हुमा । पक्त चनी सनय सीन्द्र की तेकरों में क्षिपा कर नाई की साम लेकर विचीर जिल्ल सड़ी हुई । वे दोनों कमलमीर के टाइर के पास जा कि । काने बद्दासिंद्र की पहुत साराम से रक्सा । वही क्रोनेंद्र बहु होने पर विचीर का राज्य हुमा ।

१-भले पुरे की पहचान

किर परवेश्य में पूरा मायको पैदा किया है और हमारें
कि क्षा के प्रांच में स्था में स्था किये हैं वह यही
केरत हैं कि क्षा मालक माने यूच में सहा प्राप्त करते हैं
कि का कर कर लगा दिसानाया करते हैं क्षा प्राप्त करते हैं
कि कर कर कर लगा दिसानाया करते हैं क्षा प्राप्त करते हैं
कि कर कर कर लगा दिसानाया करते हैं क्षा प्राप्त करते हैं
क्षा कर कर लगा हमार में पराप्त करते हैं क्षा प्राप्त है कर कर कर है के कर कर है कर कर है के कर कर है कर कर है के कर कर है क







ग्टना) पहुँचे । वहाँ राजा विम्यसार इनसे मिलने घ्राये धौर हुत सा धन भेंट फरने सने परन्तु इन्होंने कहा—"मुभे धन ने इच्छा नहीं । मैंने भगवान के लिए सय घर वार छोड़ देया है।"

बुद्धजी ने गया में जाकर वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों से छहीं ग्राफ्त पड़े। इससे भी जब इनको पूरी शान्ति न मिली वब ये गाँच शिष्यों की साथ लेकर जड़ुल में चले और वहाँ खाना पीना छोड़ कर भगवद्भजन में मग्न रहने लगे। परन्तु शान्ति फिर भी न मिली। वस समय इनको ज्ञान हो गया कि शरीर की शिक घटने से युद्धि की शिक भी कम हो जाती हैं। युद्धजी की इस प्रकार की स्थिर पृत्ति देख कर शिष्यों ने उनका साथ छोड़ दिया।

एक दिन एक पीयल के नीचे धैठ कर बुद्धजी ने यह निश्चय कर लिया कि भय मुक्ते क्या करना चाहिए। उसी दिन से छन्होंने युद्ध पदवी पाई।

सबसे पहले कार्रा पहुँच कर सारनाघ के पास ये लागों को समक्ताने लगे कि सब जीवों पर दया करी।

कुछ दिन के बाद राजगढ़ के राजा विन्यमार इनके मत में भ्रा गये। परन्तु इस पर इनके पुत्र ने रुप्ट होकर इन्हें सार हाला। परन्तु युद्धजों जब फिर श्रमण करने हुए राजगढ़ गये ते। वह स्वयं भी उनका चेला है। गया।

इसी प्रकार युद्ध जो लागा का झपने धर्म की बाते सिखाते





बाह्यवनाद । रहे। सहस्रों मनुष्य उनके चेले है। गये। बाज-कल संगार जितने बौद्धमतानयायी हैं बतने धीर किसी मत के नहीं हैं। दो सहस्र वर्ष पूर्व हमारे देश में उनका मत 👯 फैला हुचा था। चत्र भी चीन, जापान, ब्रह्मा, स्याम ग्रेर

दूसरे दूसरे देशों में यह मन चधिकता से पाया जाता है। मत्य है संमार में सब प्राधियों पर हया करना ही उरि है। बाम्सी वर्ष की बायु में सुद्धजी ने इस लोक की की निर्वाण प्राप्त किया ।

६-कोई काम यिना सोचे समभे न करना चाहिए

यक बादगाह की निकार स्पेशने का बदा क्यमन बा

उसने एक बात पास रक्या था। वह क्से बढ़ा चाहता था। यक दिन वह बाज की साथ लेकर शिकार की चला। अहन में वहुँच कर एक हिरम के पीछे बगर्न मोबा बाल दिया। बहुर हर तक ग्रेंचा माता, परम्तु दिस्त द्वाच ल चावा। निश्चान वर्ष

कर कर केंद्र गया कीए व्यास से स्थाकुत कीए पीडित होका हुवर चवर मत की बोम करने सवा । बोजना स्वामना एक

बक्तर के जीने का वर्षेत्रा । कम पर्वत से सूँद बूँड करके बड़ा निर्मेश अस तपन रहा मा । इसे देख कर बादगाद में एक कतात निकाल कर कोई काम दिना सेचे समर्भ न करना चाहिए। ६.४ तत्ते के नोचे रख दिया। अब कटोरा भर गया धीर धाहणाह ने पीना चाहा तभी याज़ ने पर मार कर इसे गिरा दिया। सदराह ने किर कटोरा पानी से मरा धीर पीना ही चाहा था कि बाज़ ने किर पर मार कर गिरा दिया। बाहगाह प्यास से प्रा व्याङ्क या। उसने कोच में भर कर बाज़ की पृथ्वी पर परक दिना। बाज़ पृथ्वी पर गिरते ही मर गया।

्लं ने बादसाह का एक तीकर, जो पीछे रह सथा था. का पहुँचा। उसने झाकर देशा कि पाज सरा पटा है थी। करणह पात से ब्याकुत हो रहा है। नीकर ने रिकास निकास का कानी सुराही में से पानी सर कर बादराई के कानने किया। बादसाह ने कहा—"जो निर्माण वर्ष महों में सेटसक रहा है जगर जाकर उनका हुंक मराताने ।



























रिरोति शति है तो त्यों चिच की भी भानन्द होता रति है।

किली कार्द के झारम्म हो की देख कर उस काम के करने-रो ए देशे पमतारों और महन-गोलवा विदिव हो े । हेरो एक इस लीग किसी इदेखी की वीड़ा चाइते हैं रे म्हण स्तरी पहली ईट स्याइता है स्सी की इस र १९१६ मनुष्य मानते हैं, बदोकि पहली ईट के उखाइने की हों का हाराह सेना सहज हो जाता है। इसी प्रकार ' क्षेटे काता से धारस्य करके बड़े बड़े काम भी हो जाते किनु पहले ही बाँद कोई सनुष्य सीमान्य के सबसे ऊँचे मा पर बहुने का एखीन करे ही निध्यय है कि बह मुँह के ींगण और इसकी धारण वासी संपण न होगी। क्येंकि ा रोदे की सोहियी पर पढ़े उपर की सोहियी पर कीई १ अर राष्ट्रण । क्षामाब ऐसा ब्हीन रहति है कि जा पहले १ १ छार बाता के दिला कि दे एक बार की बढ़े बाफी के बात L + 4'E 1















किए कुछ सभी की तो भरपूर शिष्ण देने हैं पर व को शिष्ण के कहरी पास कहती, जीवन का सद व को व के कहा की से सकता मुख्य प्राप्त हो तथा तथा के कहा कहा है होंगे साथ की शिष्ण गही देने। व जिल्ला को कि समय कामून्य भन है। इस्मीनल विच्या को किए व शिक्षय कुम्ली हा सकता है क्यांक विच्या करा कि समय कामून्य भन है। इस्मीनल विच्या के किए या कि क्यांक्य के स्थाप की क्यांक्य की का का क्यांक्य के किया क्यांक्य की क्यांक्य की क्यांक्य के अव का क्यांना को स्थापन भारीहर कि क्यांक्य



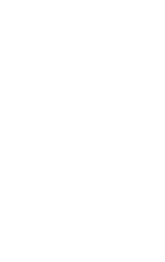
मार के नह होने का क्रानुतार बनके हृदय की स्पर्श तक नहीं धार । लोबन के साथ पुद्ध करने के लिए सुमन्तिन युवक हर दिन दिन नियमों की भवतस्थन करके समय के सह-धारूम काने पर समाजननेताय हो सकते हैं. इस विषय में एक स्टान्हरूप महात्ना ने नीचे हिस्सी प्रटाली के प्रमुतार केट करते की काहत ही है-

मेरू का बर्ताव

(!) बहुत से कामी की एक साथ करने का सहज उपाय िक एक दारएक ही काम की करी।

- (१) डो बाम तुरस्त पूरा करने घाष्य है बसे बसी समय #1 groit 1#
- (३) जिस काम की धाल करता है उसे कर के _{लिए} E E'fe gegin :
 - (४) थे। काम सापने किये होता ही, वसे दूसरे के बरोधे
- neber :
 - १६) बदलपुर से फिल्मी कारी कास पूरा किया प्राप्त बस्का की बाद है दिलाब हैगाए।
 - (६) बर्न क्षांत्र काम पूरा किया साप्टे हो। हा हमें हरे ** # 47 S

 - . इन्तर्वे अक्त क्षेत्रकार रूख्य केराकेल _{स्}



पद्मभाग

१--- चृन्दविनोद सतसई

मान होत है गुनन ते, गुन बिन मान न होय। **एक सार्य राखें सबै, काग न राखें कोय ॥१॥** हुरं लगव सिख के वचन, हिये विचारी भाष। कड़कों भेपन विन पिये, मिटेन तन की ताप हर।। रहे समीप बहेन के होत बहा हित नेत। संबद्दी जानत बड़त है, वृक्त बराबर बेल ॥३॥ हितहू को कहिये न तिहि, जो नर द्वीप भवोष। ल्यों नकटें की झारसी, डीत दिखायें कीय ॥४॥ भोछेनर की प्रीति की, दीन्हीं रीति वताय। जैसे खोदल ताल जल, घटत घट घट जाय ॥४॥ जिहि प्रसंग दूबद सर्ग, तिजये वाको सामा है मदिरा मानत है जगत दूध क्यांसी द्वार ॥६॥ ा । जार्क मेंग दूबम दुर्ग करिय विद्धि पहिचानि करा हैसे ^{मर्ग} दुव सर सुर' **महोरी शनि** ६३ ा भी तर तुम परिकेत पार्ट के पा १९४० च्या कही वे होता.



हिनन" वे नर मर चुके, जे कहें मोगन जाहि।

हि पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि हि।

प दशा कुल देख के, सर्वे करत सम्मान।

हिमन" दोन घनाय को, तुम यिन को भगवान हि।

३--रहीम के दाहे

.हिमन" चुप हैं बैठिए देखि दिनन को फेर। िनोकै दिन स्नाय हैं, बनत न लगिष्ठे बेर ॥१॥ 🕈 दिमन" नीचन संगवसि, लगत कलंकन काहि ? ा फलारिन हाच लिया, मदसमभि संगताहि॥२॥ हैं (हिमन" निज मन की विधा, मनही राखी गीय। ने घठिलेहें लोग सय, याँटिन लैहें काय ॥३॥ गरों बात वनै नहीं लाख करी किन कीय। [हिमन" बिगरे दूध की, मधे न माखन होय॥४॥ (हिमन'' भनी न कीजिए, गष्टि रष्टिए निज कानि। हिँजन भ्रांत फूर्ज तक, डार पात को हानि पूर्। ही रिस्मन देश्य बडन का लेप ने हा चर्च सर्पर हर काम अपने सूर्य केते की त्यवाप र उद्धार कर है। कई सह स्टार्ट प्राप्त पर स्तार कुरवार केट पक्षेत्रसम्बद्धः (



दुष्ट मतुष्यी के लक्ष्य।

विन कर संग सदा दुखदाई। विनि कपितृष्ठि घाली हरहाई॥

खलन हृदय भवि वाप विशेषी।

जरहिं सदा पर-संपात देखी ॥ जहें कहें निन्दा सनहिं पराई।

पर पहुं । । पर श्रुपाद पराइ । इपेंहिँ मनहें परी निधि पाई ॥

दैर भकारन सब काह सी।

जा कर दिव धनदिन वाह सी ॥ 🗸

भूठं लेना भूठे देना । भूठे भोजन भूठ चवेना ॥

बोल्लीहें मधुर बचन जिमि मारा।

सायँ महा भवि दृदय करे।

लोभै भ्रोड्न लोभै हासन । बस्मोदर पर यमपुर बानन ।

काह को जो सुनर्दि बढाई।

स्व'स लेक्टिलनु भूडा भाई ।

श्वास सार्य गतु जुल्लाम । _{अब स्ट}र का इसी विश्ला

सुत्या दर्णहें सामन् करम्पक

बार्यान पुरुषिय संबादात सामुगये सर्वाचालु सामान



रामघन्द्रं का लड्कपन।

विद्या विनय निपुण गुण शीला। खेलेहिं खेल सकल नृपलीला॥

करतल बाय धनुप झति सोहा। देखत रूप चराचर सोहा॥

पन्धु सखा सब लेहिं युलाई ।

वन मृगया निव खेलिहें जाई ॥

पावन मृग मारिहें जिय जानी।

प्रतिदिन नृपष्टि दिखावर्हि धानी ॥ धतुत्र सखा सँग भोजन करहीं।

मातु पिता झाझा चनुसरहाँ ॥ जेहि विधि सुस्ती होहिँ पुरलोगा ।

करहिँ कृपानिधि सोह संयोगा ॥

प्रातकाल इठि के रघुनाया। मातु पिता गुरु नावर्धिं माया॥

भागमु मौगि करि पुरकाला । देशि चरित दरविधे मन राला ॥

कोराल पुरवासी नर, मारिएन्ट घर बाहा। बादह वे बिप सागरी, सब कर राम प्रशास ॥



मारोच-वध ।

७-मारीच-वध

(रामायद से)

हेहि बन निकट दशानन गयऊ।

वय मारीच कपट मृग मयऊ॥

श्रीत विचित्र कहु बरनि न जाई।

कनक-देह मीट रचित बनाई॥
सीता परम रुचिर मृग देखा।

श्रीम सेंग सुमनीहर बेपा॥

सुनहु देव रघुवीर रूपाला । यदि मृग कर घरि सुन्दर साला ।

सत्यस्य प्रभुवधं कर गर्ही। ज्ञानहं वर्षे करा वैदरी ।

मृग विकासि का पाक शोधी। कराम चार शोध गीर से प

्यान पहल के बेल मा भाजी १ १ मा १९ जेल के बे कर्म प्रकेश के प्रकार के किया है दिए

्राच्या करणा अवस्याः सर्वे विकेशसम्बद्धाः चणाः



वरिष्ठली का मरतली की उपदेश।

न्यहिँ वसन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ।

करहु बात पितु-समन प्रमाना ॥

करहु साँस घरि भूव रजाई ।

हैं तुन कहैँ सब मांति भन्नाई ॥

पर्ध्याम पितु-प्राज्ञा रास्ता ।

मारी मातु लोक सब सार्का ॥

तन्य प्रमातिह बीकन द्वयक ।

पितु भारा भय भयत न मयक ॥

म्तुष्ति द्वित विचार तिल्लं हो पालहि पितु दैन। वे मालन मुख सुपग्न के, दसहि समरपित-ऐन।।

भवशि शरेश वचन कुर करहू ।

पालह प्रला शोक परिहरहू ॥

सुरपुर ज्य पाइहि परिवेष् ।

तुम कहाँ सुक्त सुपश नहिं देष् ॥

वेद विदित सम्मत सब्दी का ।

लेहिं पितु देद सो पाने दोका ॥

करमु राज परिहरहु गलानो ।

मानहुँ मेर वचन हित जानो ॥

स्ति मुग ज्युव राम वैदेले

धने चित्र कहाते. स राहत वक्त



वशिष्टजी का भरवजी की उपदेश।

नृपहिँ वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ।

फरहु वाव पितु-वचन प्रमाना ॥

करहु सीस घरि भूप रजाई। है तुम कहेँ सब मांति मलाई।।

परग्रुराम पिनुन्माज्ञा राखी।

मारी मातु लोक सब सासी ॥

वनप ययातिहि यौदन दयऊ।

पितु भारा भय भयरा न भयक ॥

मनुचित बचित विचार तिज , जा पालहि पितु वैन। उ माडन भुख सुपरा कें , बसहि समरपति-ऐन॥

> द्मविश नरेश बचन फुर करहू । पात्रह प्रजा शोक परिष्ठरह ॥

सुरपुर नृप पाइहि परिटोपू ।

तुम कहैं सुष्टत सुयश नहिंदे। ।

देद विदित सम्मत संबद्घी का। जेकि पितु देह सो पात्रे टीका॥

करवारात्र प्रविद्यात् । समानाः प्राप्तवे सार असन वित्र जानो ॥

. च ूल वर्ष (से बेंड्स इ.स.च्या १८ १ वर्ष समी



वशिष्टजी का भरतजी की उपदेश।

नृपिहिँ वचन प्रिय निहं प्रिय प्राना ।

करहु तात पितु-वचन प्रमाना ॥

करम स्पेप परि भग उन्हर्र ।

करहु सोस धरि भूप रजाई। ई तुम कहें सब भौति भलाई॥

परशुराम पितु-भाक्षा राखी। मारी मातु लोक सम साखी॥

सनय ययातिहि यौवन दयऊ ।

पितु भाहा भ्रय भ्रयश न भयक ॥

नुचित उचित विचार तजि , जो पालहिं पितु चैन। भाजन सुख सुयश के, बसहिं धमरपति ऐन॥।

प्रविश नरेश वचन फुर करहू । पालहु प्रजा शोक परिष्ठरहू ॥ सुरपुर तृप पाइहि परितेष् ।

तुम कर सुरुत सुयश नहिः देापू॥

बेद विदित सम्मत सबही का। जेटि पितु देह सापावे टोका।

जार (पणुष्य सापाव दाका) करता न परिहरत् राज्यानी

भागहीं मेर बचन जिला जाना ॥

रान भय जन्म राम बैंद्रला

भनुष्यत्र कर्षेत्रः सः १०० वनः



पितु झुरपुर सिपरान वन, करन कहहु माहिँ राज। यहि वे जानहु मीर हित, के भारन वड़ काज॥

हिव इमार सिपपति सेवकाई ।

को हरि लीन मातु कृतिसाई ॥

मैं भतुमान दोख मन माहाँ ।

भान बपाय नेगर दिव नाहाँ ॥

शोक समाज राज केहि लेखे ।

लखन-राम सिप-मद वितु देखे ॥

जाउँ राम पहेँ भावस देह ।

एकहि भेक नेर दिव पेटू ॥ मीहि समान को पाप निवासी । केहि स्वि सीय-सम बनवासी॥

राप राम कहें कामन दोन्हा । विद्वरत गमन भमापुर कीन्हा ॥

में राठ सब घनरघ कर हेतू। वैदि बाद सब सुनड सबेतू॥

रे गर मंद्र झा इरमाम्

दिन रहतार दिनाक प्रवास्

्रा अर करेडू करावन राष्ट्र १३१ व संबंध करें साक



